SET-1

Series SGN/R

कोड नं.
Code No. **29/1/R**

रोल नं.
Roll No. | | | | | | | |

परीक्षार्थी कोड को उत्तर-पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर अवश्य लिखें ।

- कृपया जाँच कर लें कि इस प्रश्न-पत्र में मुद्रित पृष्ठ **4** हैं ।
- प्रश्न-पत्र में दाहिने हाथ की ओर दिए गए कोड नम्बर को छात्र उत्तर-पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर लिखें ।
- कृपया जाँच कर लें कि इस प्रश्न-पत्र में **14** प्रश्न हैं ।
- **कृपया प्रश्न का उत्तर लिखना शुरू करने से पहले, प्रश्न का क्रमांक अवश्य लिखें ।**
- इस प्रश्न-पत्र को पढ़ने के लिए 15 मिनट का समय दिया गया है । प्रश्न-पत्र का वितरण पूर्वाह्न में 10.15 बजे किया जाएगा । 10.15 बजे से 10.30 बजे तक छात्र केवल प्रश्न-पत्र को पढ़ेंगे और इस अवधि के दौरान वे उत्तर-पुस्तिका पर कोई उत्तर नहीं लिखेंगे ।

हिन्दी (ऐच्छिक)

HINDI (Elective)

निर्धारित समय : 3 घण्टे
Time allowed : 3 hours

अधिकतम अंक : 100
Maximum Marks : 100

सामान्य निर्देश :

(i) इस प्रश्न-पत्र में 14 प्रश्न हैं ।

*(ii) सभी प्रश्न **अनिवार्य** हैं ।*

(iii) विद्यार्थी यथासंभव अपने शब्दों में उत्तर लिखें ।

खण्ड क

1. **निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर प्रत्येक 20-30 शब्दों में लिखिए।** 15

गुरु-शिष्य संबंधों पर प्राय: चर्चा होती है, निस्संदेह प्राचीनकाल में गुरु-शिष्य संबंध आदर्श थे। गुरु मात्र शिक्षा देने वाला नहीं, जीवन को स्वरूप देने वाला भी था। शिष्य पूर्णत: उस पर निर्भर था और उसका अनुकरण करता था। किंतु तब शिक्षा भी तो कुछ विशिष्ट जनों को ही सुलभ थी। शेष लोग जीवन की कार्यशाला में कार्यानुभव से शिक्षित होते थे। आज गुरु दुर्लभ है, अध्यापक सुलभ। अध्यापक की अपनी आवश्यकताएँ हैं। वह माँग और पूर्ति के बीच एक कड़ी है। उससे जो अपेक्षाएँ की जाती हैं, वह उन्हें पूरी कर देता है। शिष्य अर्थात् विद्यार्थी उन्हीं बातों को सीखते हैं जो उनके लिए निर्धारित हैं। जीवन कौशलों की विशद और वास्तविक जानकारी तो विद्यालय परिसर से बाहर सामाजिक व्यवहार से प्राप्त होती हैं। मात्र कुछ घंटों के लिए विद्यालय में रहकर वह जीवनोपयोगी सभी बातें सीख ले, यह संभव नहीं।

अध्यापक से यह अपेक्षा करना कि वह 'गुरु' जैसा आचार-व्यवहार करे, कैसे संभव हो सकता है। समय की गति आगे की ओर होती है। उसका रथ पीछे नहीं मोड़ा जा सकता। आज का अध्यापक वर्तमान की चुनौतियों के सामने है। उसे वर्तमान में जीना है और वर्तमान में प्राय: सभी परंपरागत मूल्य या तो बदल गए हैं, या बदलने की प्रक्रिया में हैं। इसलिए अध्यापक से गुरु-शिष्य के ज़माने के मूल्यों की अपेक्षा करना तर्कसंगत नहीं है।

निस्संदेह कुछ क्षेत्र अभी हैं, जहाँ गुरु-शिष्य संबंधों की परंपरा जीवित है। जैसे भारतीय शास्त्रीय संगीत और नृत्य। इनके घरानों की मर्यादा बनी हुई है और श्रद्धापूर्वक निभाई भी जाती है। भारतीय कुश्ती-पहलवानी के अखाड़ों में भी एक सीमा तक यह जीवित है। इसी में संतोष कर लिया जाना चाहिए। अधिकांश क्षेत्रों में तो गुरु शब्द का अवमूल्यन ही दिखाई पड़ता है।

(क) प्राचीन काल में गुरु-शिष्य संबंधों की क्या विशेषता थी? 2

(ख) भाव स्पष्ट कीजिए – 'आज गुरु दुर्लभ है, अध्यापक सुलभ।' 2

(ग) अध्यापक को माँग और पूर्ति के बीच की कड़ी क्यों कहा गया है? 2

(घ) जीवन-कौशल कहाँ अधिक सीखे जा सकते हैं और क्यों? 2

(ङ) अध्यापक से गुरु जैसे आचार-व्यवहार की अपेक्षा क्यों नहीं की जा सकती? 2

(च) किन क्षेत्रों में और किस रूप में गुरु-शिष्य परंपरा अभी जीवित है? 2

(छ) 'आज अधिकांश क्षेत्रों में 'गुरु' शब्द का अवमूल्यन ही दिखाई पड़ता है।' – इस कथन के पक्ष या विपक्ष में अपने विचार दीजिए। 2

(ज) उपर्युक्त गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक दीजिए। 1

2. **निम्नलिखित काव्यांश को पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लगभग 20 शब्दों में लिखिए।** 1x5=5

वह प्रदीप जो दीख रहा है झिलमिल दूर नहीं है,
थक कर बैठ गए क्यों राही, मंजिल दूर नहीं है।

अपनी हड्डी की मशाल से हृदय चीरते तन का
सारी रात चले तुम दुख झेलते कुलिश निर्मम का।
एक खेय है शेष, किसी विध पार उसे भी कर लो,
वह देखो, उस पार चमकता है मंदिर प्रियतम का।
आकर इतनी पास फिरे, वह सच्चा शूर नहीं है,
थक कर बैठ गए क्यों राही, मंजिल दूर नहीं है।

(क) झिलमिलाता दीपक किसे कहा है और क्यों?

(ख) राही को क्या न करने को कहा गया है और क्यों?

(ग) राही को यात्रा में किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ा?

(घ) किसे सच्चा शूर नहीं कहा जा सकता और क्यों?

(ङ) काव्यांश का संदेश अपने शब्दों में लिखिए।

खण्ड - ख

3. **निम्नलिखित में से *किसी एक* विषय पर लगभग 300 शब्दों में निबंध लिखिए।** 10

(क) समय न कभी थके न कभी रुके

(ख) भारतीय समाज में व्याप्त अंधविश्वास

(ग) औद्योगीकरण का महत्त्व

(घ) उजड़ते वन और मानव का भविष्य

4. आप इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि हिंदी के प्रति विद्यार्थियों में रुचि घटती जा रही है। कारणों का उल्लेख करते हुए लगभग 150 शब्दों में एक पत्र किसी समाचार पत्र के संपादक को लिखिए। 5

अथवा

निजी विद्यालयों में प्रवेश पाना कठिन है। इस समस्या के समाधान के लिए अपने राज्य के शिक्षा मंत्री को एक पत्र लिखिए।

5. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर प्रत्येक 20-30 शब्दों में लिखिए।** 1x5=5

(क) भारत में पहला छापाखाना कहाँ और कब खुला?

(ख) इंटरनेट पत्रकारिता बहुत लोकप्रिय क्यों होती जा रही है?

(ग) 'खोजी पत्रकारिता' से आप क्या समझते हैं?

(घ) जन संचार के प्रमुख माध्यम कौन-कौन से हैं?

(ङ) 'धारावाहिक' से क्या तात्पर्य है?

6. 'स्वच्छ भारत, स्वस्थ भारत' विषय पर एक आलेख लगभग 150 शब्दों में लिखिए। 5

खण्ड - ग

7. **निम्नलिखित काव्यांश की सप्रसंग व्याख्या लगभग 150 शब्दों में कीजिए।** 8

जो है वह सुगबुगाता है
जो नहीं है वह फेंकने लगता है पचखियाँ
आदमी दशाश्वमेध पर जाता है
और पाता है घाट का आखिरी पत्थर
कुछ और मुलायम हो गया है।

8. **निम्नलिखित में से *किन्हीं दो* प्रश्नों के उत्तर प्रत्येक 30-40 शब्दों में दीजिए।** 3x2=6

(क) 'जनम अवधि हम रूप निहारल नयन न तिरपित भेल' इस काव्य-पंक्ति के आलोक में नायिका की मनोदशा का वर्णन कीजिए।

(ख) 'एक कम' कविता में कवि ने स्वयं को लाचार, कामचोर, धोखेबाज क्यों कहा है?

(ग) 'यह अद्वितीय, यह मेरा, यह मैं स्वयं विसर्जित' - काव्य पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए।

9. **निम्नलिखित में से *किन्हीं दो* काव्यांशों का काव्य सौंदर्य प्रत्येक 30-40 शब्दों में स्पष्ट कीजिए।** 3x2=6

(क) कवहुँ समुझि बनगमन राम को रहि चकि चित्रलिखी-सी।
तुलसीदास वह समय कहे तें लागति प्रीति सिखी-सी।।

(ख) देखा मैंने, वह मूर्ति-धीति
मेरे वसंत की प्रथम गीति-
श्रृंगार, रहा जो निराकार,
रस कविता में उच्छ्वसित-धार,
गाया स्वर्गीया प्रिया-संग।

(ग) जान घनआनँद मोहिं तुम्हैं पैज परी,

जानियैगो टेक टरें कौन धौ मलोलि है।।

रुई दिए रहौगे कहाँ लौं बहरायबे की?

कबहूँ तौं मेरियै पुकार कान खोलि है।

10. **निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या लगभग 150 शब्दों में कीजिए।** 6

इसलिए प्रजापति-कवि गंभीर यथार्थवादी होता है, ऐसा यथार्थवादी जिसके पाँव वर्तमान की धरती पर हैं और आँखें भविष्य के क्षितिज पर लगी हुई हैं। इसलिए मनुष्य साहित्य में अपने सुख-दुख की बात ही नहीं सुनता, वह उसमें आशा का स्वर भी सुनता है। साहित्य थके हुए मनुष्य के लिए विश्रांति ही नहीं है, वह उसे आगे बढ़ने के लिए उत्साहित भी करता है।

11. **निम्नलिखित में से *किन्हीं दो* प्रश्नों का उत्तर प्रत्येक लगभग 50 शब्दों में दीजिए :** 4x2=8

(क) संबदिया किसे कहते हैं? उसके चरित्र की चार विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

(ख) प्रकृति के कारण विस्थापन और औद्योगीकरण के कारण विस्थापन में क्या अंतर है? - 'जहाँ कोई वापसी नहीं' निबंध के आधार पर उत्तर लिखिए।

(ग) 'कुटज' की दुरंत जीवनी-शक्ति की चर्चा करते हुए लिखिए कि उससे आप क्या प्रेरणा ग्रहण कर सकते हैं?

12. ममता कालिया **अथवा** भीष्म साहनी के जीवन और रचनाओं का संक्षिप्त परिचाय देते हुए उनकी भाषा-शैली की दो विशेषताओं पर लगभग 200 शब्दों में प्रकाश डालिए। 6

अथवा

जयशंकर प्रसाद **अथवा** केशवदास के जीवन और रचनाओं का संक्षिप्त परिचय देते हुए उनकी दो काव्यगत विशेषताओं पर लगभग 200 शब्दों में प्रकाश डालिए।

खण्ड - घ

13. 'आरोहण' कहानी से उभरने वाले जीवन-मूल्यों का उल्लेख करते हुए उनकी उपयोगिता पर लगभग 150 शब्दों में प्रकाश डालिए। 5

14. (क) सूरदास के लिए 'यह फूस की राख न थी, उसकी अभिलाशाओं की राख थी' - इस कथन की पृष्ठभूमि का उल्लेख करते हुए लगभग 150 शब्दों में विवेचन कीजिए। 5

(ख) फूल केवल गंध ही नहीं देते, दवा भी करते हैं, कैसे? - 'बिस्कोहर की माटी' पाठ के आधार पर लगभग 150 शब्दों में उत्तर दीजिए। 5